(B) सामाजिक कारक -

(i) विद्यालय - व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। परिवार के बाद बच्चे का अधिकांश समय विद्यालय में ही गुजरता है। विद्यालय के भौतिक वातावरण, अनुशासन, शिक्षक के चरित्र, शिक्षार्थी के चरित्र का प्रभाव व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है।

(ii) खेल - खेल के मैदान में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्थितियों के बच्चे जमा होते हैं। उनके बीच होने वाली परस्पर क्रिया का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पाता है।

(iii) पास-पड़ोस - आस-पड़ोस में यदि अच्छे लोग रहते हैं तो उसका अच्छा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है।

(iv) परिवार - इसका प्रभाव व्यक्तित्व पर सबसे अधिक पड़ता है। बच्चे अपने माँ-बाप का अनुकरण करता है। इसलिए इसलिए परिवार को प्रथम पाठशाला कहा जाता है।

इन कारणों से उनमे श्रेष्ठता का भाव, आधिपत्य, बहिर्मुखता, आत्मविश्वास आदि शीलगुणों का विकाश होता है।

इसके विपरीत मंदबुद्धि के बच्चों को उन सभी परिस्थितियो मे उपेक्षा तथा निन्दा का सामना करना पड़ता है। ये कारक उनमें हीन भाव, दोष भाव, इत्यादि शीलगुणों का विकास करते हैं। तीव्र बुद्धि होने पर शारीरिक दोष भी गौण हो जाते हैं।

(ii) शारीरिक संरचना का प्रभाव - शारीरिक गठन, लंबाई, ढाँचा, रूप-रंग आदि शारीरिक संरचना के अंतर्गत आते हैं। ये सभी शारीरिक शीलगुण वंशानुगत होते हैं। इस पर वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है इसी कारण किसी भी वातावरण मे मनुष्य का बच्चा मनुष्य पशु का बच्चा पशु तथा पक्षी के बच्चे पक्षी होते है।

(iii) स्नायु मंडल - यह वंशानुगत होता है। स्नायु- मंडल जितना ही अधिक जटिल होता है, व्यक्ति मे बौद्धिक - योग्यता एवं अभियोजन योग्यता उतना ही अधिक होता है। स्व-चालित स्नायु- मंडल की क्रिया मे विकृति उत्पन्न होने पर संवेगात्मक विकृति होती है।

(iv) पीयुष ग्रंथि - यह मटर के दाने के आकार का होता है। इससे कई हार्मोन स्रावित होते हैं। इससे सोमेटोट्रपीन हार्मोन निकलता है जिसके कारण व्यक्ति का समुचित विकास हो पाता है। इसकी कमी बचपन मे होने पर व्यक्ति का शारीरिक विकास रुक जाता है और वे नाटे हो जाते हैं। पीयुष ग्रंथि को मास्टर ग्रंथि कहा जाता है क्योंकि यह ग्रंथि को नियंत्रित करता है।

(v) थाइरॉयड ग्रंथि - यह ग्रंथि कंठ के नजदीक स्थित होती है। एक सामान्य व्यक्ति मे इस ग्रंथि का वजन 20 से 50 ग्राम तक होता है। इससे थाइरोक्सिन नामक हार्मोन निकलता है। इसकी कमी से घेंघा नामक रोग होता है।

(vi) एड्रीनल ग्रंथि - इस हॉर्मोन को आपातिक हार्मोन कहा जाता है। भय, क्रोध आदि संवेगो की अवस्था मे यह हॉर्मोन अधिक सक्रिय बन जाता है तथा इसकी मात्रा बढ़ जाती है, जिससे शारीरिक शक्ति गतिशील हो जाती है और व्यक्ति आपतिक व्यवहार करने मे सक्षम हो पाता है।

B.A-1

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तित्व के निर्धारक से तात्पर्य कुछ वैसे कारक से होता है जिससे व्यक्ति का विकास प्रभावित होता है। कुछ कारक ऐसे हैं जिसका संबंध व्यक्ति के वातावरण से होता है। कुछ कारक ऐसे होते हैं जो जैविक होते हैं।

(a) जैविक कारक - जैविक कारक परोक्ष रूप से व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। प्रमुख जैविक कारक हैं -

(i) बुद्धि - व्यक्तित्व को प्रभावित करने में बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान है। बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे प्रायः बुद्धिमान होते हैं और मंद बुद्धि के माता-पिता के बच्चे मंद बुद्धि के। अकसर देखा गया है कि बच्चे अपने माता या पिता के पूर्वजों से बौद्धिक योग्यता प्राप्त कर लेता है, जिस कारण उसकी बुद्धि उनके माता-पिता से भिन्न होता है। व्यक्तित्व के शीलगुणों के विकास पर बुद्धि का प्रभाव अलग-अलग ढंग से होता है। तीव्र बुद्धि के बच्चों के साथ परिवार, पड़ोस तथा समाज के लोग अनुकूल व्यवहार करते हैं, साथ ही उनको प्रशंसा के नजर से देखते हैं।